International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(3): 04-07

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(3): 04-07
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 04-03-2017
Accepted: 05-04-2017

विजित कुमार
शोधार्थी (पीएच.डी.), संस्कृत विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Correspondence
विजित कुमार
शोधार्थी (पीएच.डी.), संस्कृत विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

श्रौतसूत्रों में वर्णित सोमयाग संस्था

विजित कुमार

प्रस्तावना

वेदाङ्ग कल्प का यह प्रथम भाग है जिसमें महायज्ञों से सम्बन्धित विभिन्न विधि-विधानों की विस्तृत व्याख्या प्राप्त होती है। श्रौतसूत्र यद्यपि ब्राह्मण ग्रन्थों में वर्णित कर्मकाण्ड सम्बन्धी विधानों का ही निर्देश करते हैं तथापि इन्हें ब्राह्मण ग्रन्थों एवं वैदिक संहिताओं के अन्तर्गत नहीं माना जाता है वैदिक संहिताओं में वर्णित जो यज्ञ-यागादि विधान है श्रौतसूत्रों में उनका सार संकलित है।

श्रुति से श्रौत शब्द बना है जिसका अर्थ है श्रुति प्रतिपादित या वेदों में वर्णित कर्म। श्रौतसूत्रों में वेदों के बड़े-बड़े यागों का विस्तृत विवेचन है।

ऋग्वेद से सम्बद्ध दो श्रौतसूत्र है- आश्वलायन और शांखायन। आश्वलायन श्रौतसूत्र के रचयिता आश्वलायन ऋषि है आश्वलायन को शौनक ऋषि का शिष्य माना जाता है। इस श्रौतसूत्र का सम्बन्ध ऋग्वेद की शाकल और वाष्कल दोनों शाखाओं से है। इसके वर्ण्य विषयों में मुख्य याग-दर्शपूर्णमास, अग्न्याधेय, अग्निहोत्र, आग्रयणेष्टि, चातुर्मास्य, सौत्रामणी, सत्रयाग आदि है, इसमें ऐतरेय ब्राह्मण में निर्दिष्ट कर्मों से सम्बद्ध सामग्री अधिक है। इसमें कुल 12 अध्याय है। शांखायान श्रौतसूत्र शांखायन ब्राह्मण से सम्बन्धित है। इसमें 18 अध्याय है। इसके मुख्य प्रतिपाद्य विषय - दर्शपूर्णमास, अग्निहोत्र, आगब्रयणेष्टि, चातुर्मास्य, अग्निष्टोम, अतिरात्र, द्वादशाह, विश्वजित्, हविर्याग, सोम संस्थायें आदि हैं। शांखायन पर प्रो. हिलब्रान्ट का संस्करण विशेष प्रसिद्ध है। शुक्ल यजुर्वेद से सम्बद्ध कात्यायन श्रौतसूत्र है जिसके रचयिता कात्यायन है। इसमें 26 अध्याय हैं जिनका विभाजन कण्डिकाओं में हुआ है। इसकी प्रणाली शतपथ ब्राह्मण में निर्दिष्ट प्रयोग क्रम के अनुसार है। यह सूत्र माध्यन्दिन और काण्व दोनों शाखाओं में है यह श्रौत साहित्य का प्रतिनिधि ग्रन्थ है क्योंकि इसमें श्रौतसूत्रों के वर्ण्य विषय को विवेचित किया गया है। इस पर पूर्व मीमांसा का भी प्रभाव है उसके श्रुति, लिङ्ग, वाक्य, प्रकरण, स्थान और समाख्या इन छः प्रमाणों का इसमें उल्लेख है। कृष्ण यजुर्वेद से सम्बद्ध मुख्य श्रौतसूत्र उपलब्ध है। जिनके आपस्तम्ब कल्पसूत्र में 30 प्रश्न (अध्याय) है। 24 प्रश्न तक श्रौतसूत्र है, 25 और 26 प्रश्नों में गृह्यकर्म से सम्बद्ध मन्त्रों का संकलन है। 24वाँ प्रश्न गृह्यसूत्र से तथा 28 और 29वाँ प्रश्न धर्मसूत्र एवं 30वाँ प्रश्न शुल्वसूत्र से सम्बन्धित है।

बौधायन श्रौतसूत्र का प्राचीन श्रौतसूत्रों में इसका स्थान सर्वोपरि है। यह 30 प्रश्नों में विभाजित है इसके मुख्य वर्ण्यविषय दर्शपूर्णमास याग, अग्न्याधेय, अग्निहोत्र, चातुर्मास्य, अग्निष्टोम, प्रवर्ग्य, वाजपेय, राजसूय, अश्वमेध, अतिरात्र, एकाह, प्रवर आदि हैं। इसमें 100 से लेकर परार्ध तक के संख्यावाचक शब्दों का भी उल्लेख है।

हिरण्यकेशी श्रौतसूत्र में 24 प्रश्न हैं वर्ण्यविषय प्रायः बौधायन के तुल्य है। इसका प्रमाणिक संस्करण अनेक टीकाओं से युक्त आनन्दाश्रम (पुणे) से 1932 ई. में 10 खण्डों में प्रकाशित हुआ है।

वैखानस तैत्तिरीय शाखा से सम्बद्ध है इसका वैष्णवों के विशिष्टाद्वैतवादी सम्प्रदाय से सम्बन्ध है इसमें 32 अध्याय है।

भारद्वाज श्रौतसूत्र तैत्तिरीय ब्राह्मण के वाक्यों को 'इति विज्ञायते' संकेत के साथ उद्धृत किया गया है इसके वर्ण्य विषय भी बौधायन के समान ही है।

वाधूल श्रौतसूत्र में 15 प्रपाठक है। इसका विभाजन उपविभाग, अनुवाक और पटलों में किया गया है। इसका सम्पादन डॉ. व्रजबिहारी चौबे ने 1993 में होशियारपुर पंजाब से किया।

वाराह श्रौतसूत्र मैत्रायणी शाखा से सम्बन्धित है। इसमें तीन अध्याय है और उनके उपखण्ड है। प्रथम 'प्राक सौमिक' द्वितीय 'अग्निचयन' तथा तृतीय में 'अश्वमेध, वाजपेयी' जैसे विषयों को वर्णित किया गया है।

मानव श्रौतसूत्र प्राचीनतम श्रौतसूत्रों में गिना जाता है, इसमें पाँच भाग है- प्राक्सोम, इष्टिकल्प, अग्निष्टोम, राजसूय, अग्निचयन है। इसमें 11 अध्याय है उनको उपखण्डों में विभक्त किया गया है।

सामवेद से सम्बन्धित श्रौतसूत्रों का महत्त्वपूर्ण स्थान है- लाट्यायन श्रौतसूत्र 10 प्रपाठकों तथा 2641 सूत्रों में विभक्त है इसके मुख्य वर्ण्यविषय-

प्रपाठक 1 - परिभाषायें और ऋत्विक् और ऋत्विक्वरण
प्रपाठक 2 - अग्निष्टोम और उससे सम्बद्ध याग
प्रपाठक 3 - षोडशी विषय द्रव्य विधान
प्रपाठक 4 - वाजिभक्षण
प्रपाठक 5 - चातुर्मास्य, वरुण प्रपास और सोमचमस
प्रपाठक 6 - सामविधान
प्रपाठक 7 - प्रतिहार और गायत्रगान
प्रपाठक 8 - एकाह अहीन और वाजपेयी याग
प्रपाठक 9 - राजसूय याग
प्रपाठक 10 - सत्रयाग और उसकी परिभाषायें।

क्षुद्रकल्प श्रौतसूत्र के रचयिता मशक ऋषि हैं। यह आर्षेय कल्प का दूसरा भाग है। इसमें छोटे सामयागों का वर्णन है यह ग्रन्थ 3 प्रपाठकों और 6 अध्यायों में विभक्त है इसके वर्ण्य विषय प्रायश्चित्त, द्वादशाह आदि याग है।

आर्षेय कल्प सामवेदीय ताण्ड्य महाब्राह्मण से सम्बद्ध है इसके कुछ अंशों को षडविंश ब्राह्मण से सम्बन्धित माना गया है। यह दो भागों में विभक्त है (1) अर्षेय कल्प (2) क्षुद्र कल्प। सोमयाग के एकाह, अहीन, सत्र का वर्णन किया गया है।

जैमिनीय श्रौतसूत्र सामवेद की जैमिनीय शाखा से सम्बद्ध है जो तीन खण्डों में विभक्त हैं-

(1) सूत्रखण्ड - इसमें लम्बें वाक्यों वाली 26 कण्डिकायें हैं। इनमें ज्योतिष्टोम, अग्न्याधान, सोमभक्षण विधि, प्रवर्ग्यसाम विधि, प्रातः सवनविधि, दक्षिणा दानविधि, उद्गातृप्रवृत्तिक्रम औ।र अग्निचयन से सम्बद्ध सामों का वर्णन है।

(2) कल्पखण्ड - इसके चार मुख्य उपखण्ड हैं।

(क) स्तोमकल्प - इसमें विभिन्न स्तोत्रों के लिये स्तोमों का विवरण है। इसमें समस्त सोमयागों के ायग दिवसों और यज्ञानुष्ठान के क्रम का भी वर्णन है।

(ख) प्रकृति कल्प - इसमें एकाह, अहीन और सत्र यागों की प्रकृतियों अर्थात् ज्योतिष्टोम द्वादशाह और गवामयन में प्रयोग होने वाले सामों का विवरण दिया गया है।

(ग) संज्ञाकल्प - इसमें पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या की गयी है।

(घ) विकृतिकल्प - इसमें एकाह, अहीन और सत्र यागों की विकृतियों में प्रयुक्त होने वाले सामों का निरूपण है।

(3) पर्याध्याय या परिशेष खण्ड - इसमें 12 अध्याय हैं। इसमें यज्ञ के दिनों का निर्देश सामगान के विभिन्न नियमों, सामगान की विभिन्न विभक्तियों तथा प्रयुक्त होने वाले सामों का विवरण दिया गया है।

द्राह्यायण श्रौतसूत्र में 31 पटल (अध्याय) है, और कुछ उपविभाग है इसका अन्य नाम वसिष्ठ सूत्र है इसकी विषयवस्तु का लाट्यायन श्रौतसूत्र के साथ साम्य है तथा इसमें सूत्रों की संख्या अधिक है।

अध्याय- 1-7 ज्योतिष्टोम, (अग्निष्टोम)
अध्याय- 8-12 गवामयन, सत्रयाग
अध्याय- 12-21 ब्रह्मा के कार्य, हविर्याग तथा सोमयाग से सम्बन्धित क्रियाकलाप।
अध्याय- 22-25 एकाह याग
अध्याय- 26-27 अहीना याग
अध्याय- 28-29 सत्रयाग
अध्याय- 30-31 अयन याग

चौबीस, पच्चीस और सत्ताईस वें अध्यायों में वाजपेय, राजसूय और अश्वमेध आदि प्रसिद्ध यागों का वर्णन है।

निदान इसमें छन्दों गानों उक्थ्यों और स्तोमों के लक्षण एवं समीक्षात्मक विवरण प्रस्तुत किये गये हैं तथा सामवेद के उपनिदान जैसे महत्त्वपूर्ण श्रौतसूत्रों का उल्लेख प्राप्त होता है।

अथर्ववेद से सम्बन्धित एकमात्र वैतान श्रौतसूत्र हैं जो गोपथ ब्राह्मण पर आश्रित है इसमें 8 अध्याय और 43 कण्डिकायें हैं। इनके सम्बन्धों को निम्न रूप रेखा से भी समझा जा सकता है -

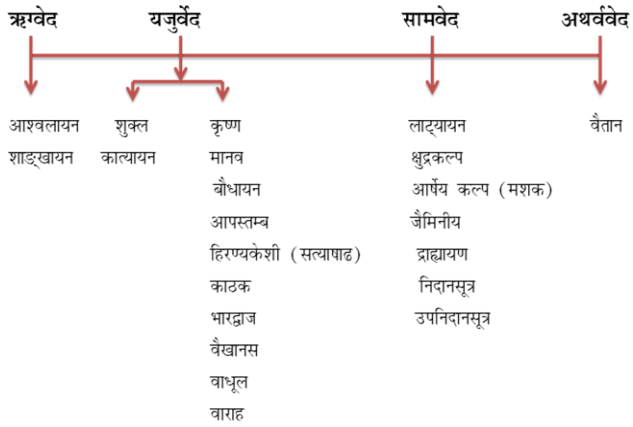

आकृति 1

इन श्रौतसूत्रों में अनेक विषयों को वर्णित किया गया है। जिन्हें तीन विभागों में विभाजित किया जा सकता है [1]। इनमें प्रथम पाकयज्ञ है जिनका द्रव्य मानव के भोज्य पदार्थ है यथा- यव, ब्रीहि, तिल, गोधूम दुग्ध, दही, घृत आदि इन्हें पाकयज्ञ कहते हैं क्योंकि इनके हवि द्रव्य पुरोडाश, चरु आदि को अग्नि पर पकाया जाता है दूसरे वे है, जिनका द्रव्य तत्स्थानीय पूतिका (तृणविशेष) होता है सोमयाग कहते हैं। तीसरे वे यज्ञ है जिनका द्रव्य अज आदि पशु होता है इनको पशुबन्ध कहा है जिसका मुख्य नाम हविर्याग हैं-

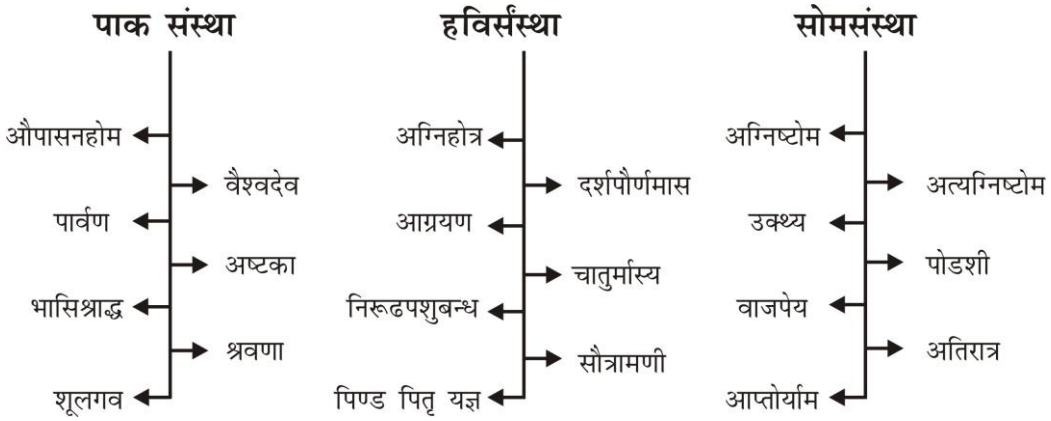

आकृति 2

इन यज्ञों को भी मुख्यत: दो प्रकार से विभाजित किया जा सकता है- श्रौत एवं स्मार्त। श्रुतिप्रतिपादित यज्ञों को श्रौतयाग और स्मृति प्रतिपादित यज्ञों का स्मार्तयज्ञ कहते हैं पाक यज्ञ को स्मार्त तथा हवि और सोम को श्रौताग्नि के रूप में वर्णित किया है। गृह्यसूत्रों में 21 प्रकार के यज्ञों की चर्चा की गई जिसमें- पाकयज्ञ (7) हविर्यज्ञ (7) सोम यज्ञ (7) है। इन सभी यज्ञों को करने से पूर्व यज्ञकर्त्ता को संस्कार सम्पन्न होने की आवश्यकता होती है क्योंकि इन्हीं सबके द्वारा वह व्यक्ति जहाँ यज्ञ करने का अधिकारी होता है वहाँ ब्रह्म प्राप्ति योग्य पात्र भी बनता है नित्य नैमित्तक तथा काम्य के रूप में पुन: इन्हें तीन प्रकार से विभाजित किया जा सकता है। नित्य यज्ञ उनको कहते हैं जिनका यथाकाल नियम से करने का विधान है याज्ञिकों के मतानुसार नित्ययज्ञों के करने से कोई फल नहीं मिलता परन्तु न करने से हानि जरूर होती है। इनमें अग्निहोत्र, दर्शपूर्णमास, चातुर्मास्य और सोमयागों को संकलित किया गया है। [2] नैमित्तक कर्म ग्रह दाह, भीषण, भूकम्प, अतिवृष्टि आदि प्रयोजन से किये जाने वाला याग है। काम्य कर्म पशुप्राप्ति धनप्राप्ति यशप्राप्ति आदि की कामना से किया जाता है।

सोमयाग मीमांसा - गौतम[3] एवं लाट्यायन श्रौतसूत्र[4] के अनुसार सोमयज्ञ संस्था में इन यागों को संकलित किया गया है - (1) अग्निष्टोम (2) अत्यग्निष्टोम (3) उक्थ्य (4) षोडशी (5) वाजपेय (6) अतिरात्र (7) आप्तोर्याम। [5]

अग्निष्टोम इन सभी यागों की प्रकृति है। सोम यज्ञ के कई प्रकार है- एकाह (एक दिन वाला) अहीन (एक दिन से लेकर बारह दिनों तक चलने वाला) तथा सत्र (जो बारह दिनों से अधिक दिनों तक चलता है द्वादशाह नामक यज्ञ सत्र एवं अहीन माना गया है[6]) जैमिनी श्रौतसूत्र के अनुसार दर्शपूर्णमास, चातुर्मास्य, पशुयज्ञ, सम्पादित करने के उपरान्त ही सोमयज्ञ किया जाना चाहिए। पूर्वाङ्ग और उत्तराङ्ग सहित अग्निष्टोम याग पाँच दिनों में सम्पन्न होता है। सोम एक प्रकार की लता है उसे किसी से खरीद कर रस निकालकर यज्ञ में प्रयुक्त किया जाता है।

(1) अग्निष्टोम - "सर्वकामोऽग्निष्टोम:" इस वाक्य के अनुसार समस्त कामनाओं की सिद्धि के लिए अग्निष्टोम याग करे। [7] अग्निष्टोम याग को चार गणों के साथ 16 ऋत्विजों में वर्गीकृत किया गया है -

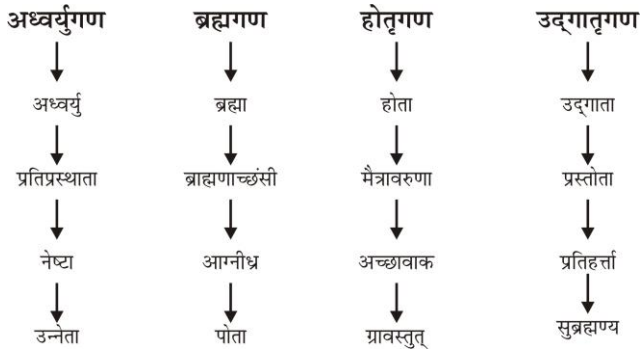

आकृति 3

अग्निष्टोम यह साम का नाम है सामवेदमें 'यज्ञायज्ञा वो अग्नये' इस ऋचा में गान के रूप से विहित साम अग्निष्टोम कहलाता है। अग्निष्टोम याग का समय वसन्त ऋतु है। [8]

प्रथम दिवस के मुख्य क्रियाकलापों में पत्नीदीक्षा, दीक्षणीयेष्टि, यजमानपावन, मुष्टिबन्धन, कृष्णाजिनदीक्षा, महावीर सम्भरण आदि है तथा द्वितीय दिवस में प्रायणीयेष्टि, सोमक्रयण, सोमपणन, आतिथ्येष्टि, सोमालम्भन, सुब्रह्मण्याह्वान, प्रवर्ग्यविधि को वर्णित किया है। तृतीय दिवस में व्रतप्रैष, वेदिमान, प्रवर्ग्यानुष्ठान, प्रवर्ग्योत्सादन जैसे कृत्यों को विहित नियम है। चतुर्थ दिवस में धर्मोत्सादन, अग्निप्रणयन, शकटस्थापन, हविर्धानमण्डपनिर्माण, अग्निषोमीय यागविधि, संज्ञपन प्रकार, पशुपुरोडाश आदि को निर्दिष्ट किया गया है पञ्चम दिवस में ऋत्विक्प्रबोधन, प्रातरनुवाक, सवनीयनिर्वाप, महभिषव, सोमरस का याग, वहिष्पवमान ऐन्द्राग्न ग्रहयाग, वैश्वदैव ग्रहयाग आदि कृत्यों का उल्लेख किया गया है।

(2) अत्यग्निष्टोम - यह याग अग्निष्टोम की विकृति है इस भाग में कुछ विशेष विधियों को छोड़कर शेष विधियाँ अग्निष्टोम यागवत् होती है। इस याग में तेरह गृहयात्र, तेरह शस्त्र का पाठ और तेरह स्तोत्रो का गान होता है।

(3) उक्थ्य - पशु की अभिलाषा से उक्थ्य याग करना चाहिए। [9] यजमान संकल्पपूर्वक इसे प्रारम्भ करता है। [10] इसमें अग्नि एवं इन्द्र के लिए एक-एक अज पशु आवश्यक है, इसी के अनुसार पाशुक पात्रासादन करना चाहिए। इस याग में गृह, स्तोत्र और शस्त्र इन तीनों की संख्या पन्द्रह रहती है। पुरोडाश के समय अग्नि का अष्टकपाल तथा इन्द्राग्नी को बारह कपाल का पुरोडाश

याग देना चाहिए। अङ्गावदानश्रपण के निमित्त दोनों हृदयों को एक ही शूल में घुसाकर तपाना चाहिए। एक ही उखा उपयोग में लेनी चाहिए। पशु के अङ्गों के श्रपण के समय एक से दूसरे का मिश्रण नहीं होना चाहिए। शेष विधान प्रकृतिस्वरूप अग्निष्टोम के समान करना चाहिए।

(4) षोडशी याग – यह अग्निष्टोम याग की विकृति है। इस याग में ओज और वीर्य की कामना की गई। [11] इसमें पीले मुँह वाली और कृष्ण कर्ण वाली गौ से सोमक्रयण होता है इसमें गृहस्तोत्र और सोलह शस्त्र होते हैं गृहपात्रों में षोडशीसंज्ञक एकपात्र खैर की लकड़ी का चतुरस्त्र मुँह वाला होता है इस भाग में दो अज और एक मेष अपेक्षित है अग्नि और इन्द्राग्नी के लिए अज तथा इन्द्र के लिए मेष होता है। [12] आग्रयण ग्रह के अनन्तर षोडशी ग्रह विधान होता है। स्तोत्र के उपाकरण के समय पश्चिमाभिमुख कृष्ण अश्व खड़ा करना चाहिए दर्भ और हिरण्य से स्तोत्र का उपाकरण करे। याग की समाप्ति पर एक सहस्त्र ब्राह्मणभोजन कराना चाहिए।

(5) वाजपेय – वाजपेय याग षोडशी नामक चतुर्थ सोमसंस्था की विकृति है वाजपेय याग के लिए विहित समस्त क्रियाकलाप का आदेश षोडशी नामक याग से प्राप्त होता है 'वाजपेयेनेष्ट्वा सम्राड भवति' [13] इस श्रुति के आधार पर साम्राज्य की कामना से इसे करना चाहिए। इसे ब्राह्मण और क्षत्रिय दोनों ही वर्णों के यजमान कर सकते हैं। इस याग की कुछ विधियाँ साधारण जनता को भी आकृष्ट कर लेती है इसमें सत्रह दुन्दुभियों का एक साथ वजाना बहुत ही मनोरम होता है। इसी याग में सत्रह अश्वरथों का एक साथ निश्चित स्थान के प्रति दौड़ना और परस्पर एक दूसरे के आगे निकलने की प्रतियोगिता करना एक सुन्दर दृश्य उपस्थित कर देता है। स्वर्गारोहण और अभिषेक प्रकृति जैसे कर्म इस याग के महत्त्व को प्रदर्शित करते हैं। इसका काल शरद् ऋतु है।

(6) अतिरात्र – ब्रह्मवर्चस् की कामना से यह याग करना चाहिए। [14] इसमें ग्रह, स्तोत्र और शस्त्र की संख्या उनतीस होती है, यजमान संकल्पपूर्वक याग का प्रारम्भ करता है इस याग में चार पशु होते हैं। प्रथम अग्नि देवता के लिए अज, द्वितीय इन्द्राग्नी के निमित्त अज, तृतीय इन्द्र के लिए मेष और चतुर्थ सरस्वती के लिए मेषी होती है। इनका यूप में क्रमशः नियोजन करते हैं। माध्यन्दिन सवन से पूर्व अष्ट कपाल अग्नि, द्वादश कपाल इन्द्राग्नी, एकादश कपाल इन्द्र और अष्ट कपाल का सरस्वती को पुरोडाश देना चाहिए। दो उखा रखते है आग्रयणग्रह के अनन्तर क्रमशः षोडशी और उक्थ्यगृह का विधान करते हैं यथाविधि सवनीय पशुयाग करते हैं इसमें तीन रात्रिपर्याय होते हैं। प्रत्येक पर्याय में चार–चार स्तोत्र और शस्त्र होते हैं। स्तोत्र स्तवन उद्गाता करता है। शस्त्रशंसन में प्रथम होता, द्वितीय मैत्रावरुणा, तृतीय ब्राह्मणाच्छंसी और चतुर्थ अच्छावाक होता है।

(7) आप्तोयमि – यह अतिरात्र की विकृति है। [15] इस याग में गृह स्तोत्र और शस्त्र तैंतीस होते हैं। इस याग में एक, तीन, बारह या यथेष्ट दीक्षाऐं होती है। तीन उपसदा और एक सुत्या होती है सवनीय पशु, अग्नि अज, इन्द्राग्नी अज इन्द्र मेष और सरस्वती का मेषी होता है। अतिरात्रवत् समस्त पाशुक विधान करना चाहिए। [16] माहेन्द्रस्तोत्र का रथ के चलने के शब्द, अरणी, दुन्दुभि के शब्द और दर्भ से उपाकरण किया जाता है। [17] इस याग में उदगाता के ऊरु पर अरणी रखकर अग्निमन्थन होता है।[18] शेषविधि प्रकृतिस्वरूप अतिरात्र याग के समान करना चाहिए।

सन्दर्भ

1. गोपथ ब्राह्मण 1.1.12, पैप्लावाद संहिता 5.28.1
2. आपस्तम्ब श्रौतसूत्र 1.1.1
3. गौतम धर्मसूत्र 8.21
4. लाट्यायन श्रौतसूत्र 5.4.24
5. शतपथ ब्राह्मण 4.6.33
6. तन्त्रवार्तिक 2.2.2
7. सत्यासाढ़ श्रौतसूत्र 7.1.1
8. कात्यायन श्रौतसूत्र 7.1.5
9. सत्याषाढ़ श्रौतसूत्र 9.7
10. कात्यायन श्रौतसूत्र 9.8.5
11. सत्याषाढ़ श्रौतसूत्र 9.7
12. कात्यायन श्रौतसूत्र 9.8.4
13. शतपथ ब्राह्मण 5.1.1.14
14. सत्याषाढ़ श्रौतसूत्र 9.7
15. देवयाज्ञिक सम्मत पद्धति परिभाषा, पृ. 379
16. सत्याषाढ़ श्रौतसूत्र 9.7
17. देवयाज्ञिक स.प., पृ. 405
18. देवयाज्ञिक स.प., पृ. 406